an>

Title: Need to waive bank loans of farmers in the Bundelkhand region.

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर): सभापति महोदय, मैं ऐसे क्षेत्र से आता हूँ, जिस बुंदेलखण्ड की धरती पर भगवान श्रीराम जी ने भी 14 वर्ष के वनवास के समय चित्रकूट में शरण ली थी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामचरित मानस में लिखा है - "जैह पे विपदा पड़े, वह आवे यह देश।" उस जमाने में किसी पर विपत्ति पड़ती थी, तो वह बुंदेलखण्ड जाता था। आज बड़े कष्ट के साथ कहना पड़ रहा है कि बुंदेलखण्ड का किसान पिछले 15 वर्षों से सूखे की चपेट में है। सूखे की चपेट के कारण लोग वहां से बड़ी संख्या में पलायन कर रहे हैं। बच्चे कुपोषण का शिकार हैं। अन्नदाता किसान, अपने बच्चों को पढ़ा नहीं पा रहे हैं, अपनी बेटी के हाथ पीले नहीं कर पा रहे हैं। जमीन बेच कर उन्हें अपनी बेटी के हाथ पीले करने पड़ रहे हैं। उसके बाद भी आज यह स्थिति है कि बैंकों ने वहां पर अपनी वसूली का अभियान चला रखा है। किसान पिछले 15 वर्षों से बड़ी बुरी स्थिति में हैं। मैं इस सदन के माध्यम से और आपके माध्यम से सरकार का ध्यान इस बात के लिए आकर्षित करना चाहता हूँ कि कम से कम बुंदेलखण्ड के किसानों का एक विशेष दर्जा बनाया जाए। उसको भारत के पूरे किसानों से एक अलग श्रेणी में रखा जाए तथा उनका कर्जा माफ किया जाए और तत्काल प्रभाव से बैंकों की वसूली को रोका जाए।